देश के लोगों के ज्ञान,
कौशल और परंपरा
को समर्पित

© 1998 सेंटर फार साइंस ऐंड इंवार्नमेंट

पुस्तक में छपी सामग्री का उपयोग स्त्रोत के उल्लेख के साथ किया जा सकता है।

यह पुस्तक 'हमारा पर्यावरण' और 'देश का पर्यावरण' नाम से छपी दो अलग रिपोर्टों की अगली कड़ी है।

LEAVES OF IMPORTANT SURVIVAL TREES IN INDIA - MAHUA, KHEJDI, ALDER, PALMYRA AND OAK

प्रकाशक :
सेंटर फार साइंस ऐंड इंवार्नमेंट
41, तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110062
फोन : 91-11-6981110, 6981124, 6983394, 6986399
फैक्स : 91-11-6985879, 6980870
ईमेल : cse@sdalt.ernet.in
वेबसाइट : www.cseindia.org

एक्सीलेंट प्रिंटिंग हाउस, नई दिल्ली में मुद्रित

प्रधान संपादक
अनिल अग्रवाल और **सुनीता नारायण**

संपादक (अंग्रेजी)
श्रावणी सेन
(कापी संपादन के लिए जिम्मेवार)

संपादक (हिन्दी)
अरविन्द मोहन
(कापी संपादन के लिए जिम्मेवार)

इस पुस्तक को तैयार करने में निम्नलिखित व्यक्तियों ने सहयोग दिया है :
अजीत सिंह, अनिल कुमार, अली ए. फिरदौसी, ए.एस. कोलारकर, ए. सिंह, ए. निलस्सन, बी.सी. बाराह, पी. बसाक, एल. पी. भरारा, रमेश एम. भट्ट, एम. जी. चंद्रकांत, श्रीकुमार चट्टोपाध्याय, पी.के. छोटराय, आर. चिकण्णा, रोहन डी'सूजा, एम.के धावलीकर, डुंगलेना, वसंत गंगावणे, जी. घोष, सी. गोपीनाथ, टी. हरनाथ, जुट्टा जैन न्यूबाएर, एस. जनकराजन, दिनेश जोशी, जी.पी.काला, द्विजेन कालिया, आर. केविचुसा, कोमल कोठारी, शांता कुमार, बी.बी. लाल, के. ए. एस. मणि, एम.एस. माते, वी.ए. म्हाईसाल्कर, एस.एम. मोहनोत, सौमित्र मुखर्जी, टी.एम. मुकुंदन, पी.एस. मुनिरत्नम, एम.जी. नागराज, डी. नारायण, जी.सी. नायक, बी.एम. पांडे, यू.सी. पांडे, आर. परमशिवम, आर.के. पाटिल, पी.एन. फडतरे, विपिन पब्बी, पी.एम. राघवेन्द्र प्रसाद, रामा प्रसाद, राहुल, रामा, पी.एस. रामकृष्णन, एम.एस. राठौर, डी.एन. रेड्डी, वी.बी. सालुंके, निर्मल सेनगुप्ता, सुब्रत सिंहा, आर.के. शिवनप्पन, के.ई. श्रीधरन, टी. सुधाकर, एल.सी. त्यागी, ए. वैद्यनाथन और एम.एस. वानी।

सेंटर फार साइंस ऐंड इंवार्नमेंट के इन सदस्यों ने भी रिपोर्ट में सहयोग किया है :
अनिल अग्रवाल, अमित मित्र, अंजनी खन्ना, रीटा आनंद, अंजु शर्मा, उदय शंकर, गणेश पंगारे, तपन चौधरी, मीरा अय्यर, राकेश अग्रवाल, रजत बनर्जी, शैलेंद्र कुमार, एस. राजेंद्रन और एस. रामानाथन

हिन्दी संस्करण में अनुवाद और सहयोग :
संजय कुमार, कविता वर्मा, ललिता झा, पूनम मिश्र, दिलीप मंडल, चंद्रभूषण, हिमांशु शेखर, सुभाष चंद्र और राधेश्याम मंगोलपुरी

रिपोर्ट में छपी तस्वीरें इन संस्थानों और व्यक्तियों ने उपलब्ध कराईं :
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, गांधी शांति प्रतिष्ठान, ग्राम गौरव प्रतिष्ठान, केरल शास्त्र साहित्य परिषद, राष्ट्रीय दूर संवेदी एजेंसी, प्रदान, वनराई

अनिल अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, रीटा आनंद, डेरिल आंड्रेड, पी. बाबू, इप्शिता बरुआ, पी. श्यामल भट्ट, अनिल देशपांडे, के. गोपीनाथ, मीरा अय्यर, अंजनी खन्ना, शैलेंद्र कुमार, बी.बी. लाल, अमित मित्र, सौमित्र मुखर्जी, सुशीला नायर, स्वदेश रंजन पांडा, गणेश पंगारे, राहुल, एस. राजम, भास्कर राव, प्रदीप साहा, सर्वेश, एम.के. साथी, एस. सेनगुप्ता, अंजु शर्मा, अजीत सिंह, अमर तलवार, पुरुषोत्तम ठाकुर, ओम थानवी, रुस्तम वानिया, विष्णु भट्ट और अरविन्द यादव

आवरण और डिजाइन : **रुस्तम वानिया**

आवरण चित्र : **इप्शिता बरुआ**
(पूर्वोत्तर के प्रांत मेघालय में बांस की नलियों से सोतों का पानी प्रयोग में लाने की 200 वर्ष पुरानी प्रणाली आज भी काम कर रही है।)

प्रोडक्शन संयोजन : **बी. पाल विलियम** और **आर. आरोकिया राज**

कार्टून : **अजीत नैनन**

रेखांकन और नक्शे : **संजय घोष, मलय कर्माकर** और **कार्टोलैब्स**
(रिपोर्ट में आए नक्शे तथ्यों को बताने के लिये हैं। खुद उनके माप के पैमाने में गड़बड़ संभव है।)

ले आउट : **कृपाल सिंह** और **सुरेन्द्र सिंह**

बूंदों की संस्कृति ('डाइंग विज्डम' का हिन्दी अनुवाद) का प्रकाशन मध्य प्रदेश सरकार के राजीव गांधी मिशन फॉर वॉटरशेड मैनेजमेंट द्वारा दिए गए आदेश से ही संभव हो पाया है। हमें यह जानकर हर्ष है कि मध्य प्रदेश सरकार राज्य की सभी ग्राम जल-प्रबंधन समितियों में इस पुस्तक का वितरण करेगी। हम इस पुस्तक के शोध और प्रकाशन में सहयोग देने वाली संस्था 'सीडा' के भी आभारी हैं।